20D P
750
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1163/10/3

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 750

20-1

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
DEC 1930
339

सत्याग्रही झनकार

मुद्रक तथा प्रकाशक—
मैनेजर भास्कर प्रेस, देवरिया।
१९३० ई०]
मूल्य)। एक पैसा

891.431
S 8459
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 750
Date 30-12-51
GOVT. OF INDIA

(१२)

शुद्ध सुन्दर अति मनोहर मन्त्र वन्देमातरम् ।
मृदुल सुखकर दुःख-हारी शब्द वन्देमातरम् ॥
मन्त्र यह है तन्त्र यह है यन्त्र वन्देमातरम् ।
सिद्धि दायक बुद्धि दायक एक वन्देमातरम् ॥
ओजमय है कान्तिमय सुख शान्ति वन्देमातरम् ।
मति प्रदायक अति सहायक मन्त्र वन्देमातरम् ॥
हर घड़ी हर बार हो हर काम वन्देमातरम् ।
हर दम हमेशा बोलिए प्रिय मन्त्र वन्देमातरम् ॥
हर काम में हर हाल में दिन रात वन्देमातरम् ।
कीजिये निरन्तर शुद्ध मनसे नित्य वन्देमातरम् ॥
तन से सिर भी कटे भूलो न वन्देमातरम् ।
कैद को चाहिये मना दो शुद्ध वन्देमातरम् ॥
जेल में हो तो जागो यह मन्त्र वन्देमातरम् ।
बेड़ियों हो को बजा कर गाओ वन्देमातरम् ॥
तीर गोली तोप की है आड़ वन्देमातरम् ।
तेग, बर्छी के लिये ढाल वन्देमातरम् ॥
विघ्न विरोधी शत्रु विजयी मन्त्र वन्देमातरम् ।
'हिन्द' का हथियार है यह मन्त्र वन्देमातरम् ॥

(२)

बर्छे तीर तलवार तोप पर सैनिक नहीं डरना होगा ।
मातृ भूमि की सेवा का अब व्रत धारी करना होगा ॥
धर्म हेतु बलिदान चढ़ेंगे हंसी खुशी मरना होगा ।
पाप-शक्तिसे लड़नेको अब 'सत्याग्रह' करना होगा ॥
सहनशीलता कवच हमारा शान्ति अहिंसा-व्रत होगा ।
ऐसे धर्म-युद्ध में जाना किसे नहीं अभिमत होगा ॥
आत्मिकबलका पाठ जगतभरको अब हम सिखला देंगे ।
दिव्य तेजसे असुर शक्तिको अति नीचा दिखला देंगे ॥
हाथों में हथकड़ी पड़ी हो खड़ी उन्हें बतावेंगे ।
पड़ जावे बेड़ी पैरों में जरा नहीं घबरावेंगे ॥
तीर्थ समझ कर भक्ति-भाव से कारागृह में जावेंगे ।
जयमाला की तरह गले में फांसी भी लटकावेंगे ॥
मुंह से उफ तक नहीं करेंगे भालों पर चढ़ जावेंगे ।
पीछे कदम नहीं रक्खेंगे जीते जी जल जावेंगे ॥
मातृभूमि के लिए हिमालय के हिम में गल जावेंगे ।
सत्याग्रह व्रत से तथापि हम कभी नहीं टल जावेंगे ॥

(३)

नहीं है चाह पदवी की न दिल में दिल मिलाने की ।
नहीं परवाह दुनिया की न फैशन को चलाने की ॥
न सबसे मेल कर कर के कपट—कैंची चलाने की ।
नहीं है चाह गैरों से सलामों के कराने की ॥
नहीं है गीत गाने की धनी—मानी कहाने की ।
नहीं है चाह नौकर बन किसी को सर झुकाने की ॥
अकेली चाह भारी है मुझे इस 'देश- सेवा' की ।
कहें जो हम कभी मुंह से उसे करके दिखाने की ॥

(४)

गांधी तू आज हिन्द की एक शान बन गया ।
सारी मनुष्य—जाति का अभिमान बन गया ॥
तू सत्य अहिंसा दया निस्वार्थ त्याग से ।
इस आज मृत्यु—लोक में भगवान बन गया ॥
तेरा प्रभाव सादगी हस्ती को देख कर ।
दुश्मन भी बेजबान हो हैरान बन गया ॥
तेरी नसीहतों में वह जादू का असर है ।
जिसको लगी हवा तेरी, इन्सान बन गया ॥

तू दोस्त है हर कौम का हर दिल अजीज है।
सारा जहान तेरा कदर-दान बन गया ॥

(६)

इक लहर मचा दी भारत में इन गान्धी टोपी वालों ने।
स्वाधीन बनो यह सिखा दिया इन गांधी टोपीवालों ने ॥
सदियोंकी गुलामीमें फँस कर अपने को भी जो भूले थे।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो इन गांधी टोपीवालों ने ॥
सर्वस्व देश हित कर दो तुम अर्पण सपूत हो माता के।
सर्वस्व त्याग का मन्त्र दिया इन गांधी टोपी वालों ने ॥
अनहित में भारत माता के जो लगे देश-द्रोही बनकर।
उनको सत पंथ पर चला दिया इन गांधी टोपीवालों ने ॥
पर बन्द हुई कितनी मोलें लङ्काशायर भी चीख उठा।
स्वदेश का डङ्का बजा दिया इन गांधी टोपी वालों ने ॥
बैठे हैं विदेशी व्योपारी अपना सिर धुन चिल्लाते हैं।
खादी से प्रेम किया जब से इन गांधी टोपी वालों ने ॥
भाइयो जो हैं इस भारत के इन दीनों के प्राण पियारे हैं।
नेता गांधी को बना लिया इन गांधी टोपी वालों ने ॥
सब मेल करो तुम आपस में जञ्जीर गुलामी की तोड़ो।

माना गाँधीजी का कहना है, इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
है विकट समस्या आगे जो उसको भी हल करना होगा।
जरिया बस एक निकाल लिया इन गाँधी टोपी वालोंने ॥
युवकों के हृदय दुलारे हैं आंखों के अनुपम तारे हैं।
चुन लिया जवाहिर को राजा इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
खुश हुआ हृदय यह सुन करके स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही इन गाँधी टोपी वालों ने ॥

(६)

खादी का डङ्का आलम में बजवा दिया गाँधी बाबा ने।
इन मैंचस्टर लङ्का शायर को मिटवा दिया गाँधी बाबा ने ॥
देशी वस्त्रों को पहनो तुम दो छोड़ विदेशी कपड़ों को।
यह पाठ बोल कर भक्तोंसे पढ़वा दिया गाँधी बाबा ने ॥
देशी धोती' गाँधी टोपी, खादी का कुर्ता औ चादर।
ओढ़ना बिछौना खादी का बनवा दिया गाँधी बाबा ने ॥
मनहूस विदेशी कपड़ों को डलवा दिया आगमें होली।
शुभ चलन स्वदेशी खादीका चलवा दिया गाँधी बाबा ने ॥
जो पहन साड़ियां परदेशी चलती थीं भारत की नारी।
खादी से उनका सुन्दर तन सजवा दिया गाँधी बाबा ने ॥

सिर से पैरों तक है खादी, खादीके स्वेत समुन्दरसे
है लाखों जमाने के दिल को दहला दिया गांधी बाबा ने ।
सब त्यागो विदेशी कपड़ों को पहनो दिनेशी देशी खादी ।
खादी का झंडा भारत में गड़वा दिया गांधी बाबा ने ॥

(७)

कट कट के मरना होगा ।

आओ वीरो मर्द बनो अब जेल तुम्हें भरना होगा ।
सत्याग्रहके समर में अभी आ आकर डटना होगा ॥ कट० ॥
शूर लड़ाके मरदाने हो पैर हटाना कभी नहीं ।
मरते मरते माता का अब कर्ज अदा करना होगा ॥ कट० ॥
वक्त नहीं है ऐ वीरो अब गाफिल हो कर सोने का ।
दौड़ चलो मैदानों में माता का दुःख हरना होगा ॥ कट० ॥
याद करो माता का तुमने बहुत दुग्ध है पान किया ।
दुग्ध पियेकी लाज बहादुर किसी तरह रखना होगा ॥ कट० ॥
शेर मर्द हो वीर बाँकुड़ो याद करो कर्तव्यों का ।
मातृ- वेदी पर हँसते हँसते कट कट के मरना होगा ॥ कट० ॥

(४)

शहीदों के खूँ का असर देख लेना,
मिटायेंगे जालिम का घर देख लेना ।
किसी के इशारे के हम मुन्तजिर हैं,
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना ॥
झुका देंगे गरदन को हम जेरे खंजर,
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना ॥
जो खुदगर्ज़ गोली चलायेंगे हम पर,
तो कदमों में उनका ही सर देख लेना ॥
नखल हमने खींचा है खूं से जिगर के,
वह होगा कभी बारवर देख लेना ॥
किनारे पै आये भंवर से यह किश्ती,
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना ॥
बलायें ये जायेंगी खुद सर नहीं हो,
नहीं होगी इनकी गुजर देख लेना ।
खुशवक्ती हुआ हिन्द आजाद अपना,
छपेगी यह एक दिन खबर देख लेना ॥

मुद्रक:— मैनेजर, भास्कर प्रेस, देवरिया (गोरखपुर)